REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

''शासकीय एंव अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन'' (बिलासपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में)।

कृष्ण कुमार पाण्डेय[1] , डॉ. पार्वती यादव[2] ,
श्रीमती मीनाक्षी चन्द्रवंशी[3]
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग,डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय कोटा,बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश–

सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह उन वस्तुओं या विचारों का उत्पादन करता है जो अनिवार्य रुप से नये हो और वह जिन्हे पहले से न जानता हो। प्रस्तुत कार्य में शासकीय एंव अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रुप में 60 विद्यार्थियों का चयन किया है। ऑकड़ों के संकलन हेतु डॉ. रोमा पाल द्वारा निर्मित A New Test of Creativity (VERBAL) प्रमाणीकृत उपकरण का उपयोग किया गया है। परिकल्पनाओं के प्रकलन के पश्चात् यह पाया गया कि शासकीय विद्यालयों के छात्रों की तुलना में अशासकीय विद्यालयों के छात्र अधिक सृजनात्मक हैं।

शब्द कुन्ज – शासकीय, अशासकीय, सृजनात्मकता।

प्रस्तावना–

सर्वशक्तिमान ईश्वर ब्रम्हाण्ड का निर्माणकर्ता है । वह परम आत्मा और उसके सूक्ष्म सृजनात्मकता योग्यता विद्यमान है। उसने हम सबको तथा प्रकृति की सभी वस्तुओं को बनाया। हम सब उसी की सृष्टि हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार हम उस परमात्मा के अंश हैं इसलिए हममें भी सृजनात्मक योग्यता विद्यमान है परन्तु जैसा कि हम देखते हैं कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अनुपम है।इसलिए सभी प्राणियों में एक ही स्तर की सृजनात्मकता या सृजनात्मक योग्यता विद्यमान नहीं है । हममें से कई व्यक्तियों में उच्च स्तरीय सृजनात्मक प्रतिभाएँ होती है और यही व्यक्ति कला, साहित्य, विज्ञान, व्यापार, शिक्षण आदि विभिन्न मानवीय क्षेत्रों में संसार का नेतृत्व करते हैं।

गाँधी , लिंकन , भाभा, शेक्सपियर, न्यूटन बर्ट्रण्ड रसैल, लियानारर्डो – द. विन्सी आदि सृजनात्मक व्यक्ति थे जिन्होंने अपने–अपने क्षेत्रों में विशिष्ट ख्याति प्राप्त की इसमें कोई संदेह नहीं कि ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा थी। परन्तु प्रभिात्मक योग्यताओं के विकास में शिक्षा तथा वातावरण के प्रभाव की भी अवहेलना नहीं की जा सकती है। अच्छी शिक्षा, अच्छी देखभालसृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अवसरों की व्यवस्था सृजनात्मकता को अंकुरित एवं पोषित करती है। इसके माता–पिता समाज तथा अध्यापक अपनी भूमिका निभा सकता है। वे बच्चों के पालन–पोषण तथा उनकी सृजनात्मक योग्यताओं के विकास में सहायता दे सकते हैं।

समस्या कथन –

'' शासकीय एंव अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन'' (बिलासपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में)।

प्रयुक्त पदों की क्रियात्मक परिभाशा –

सृजनात्मकता– व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह उन वस्तुओं या विचारों का उत्पादन करता है जो अनिवार्य रुप से नये हो और वह जिन्हे पहले से न जानता हो।

शासकीय विद्यालय–ऐसे विद्यालय जिनकी पूरी व्यवस्था सरकार के अनुरूप निर्देशित की जाती है। सरकारी विद्यालय के अंतर्गत आते हैं। यह सरकार द्वारा बनाये गये मानकों के अनुरूप कार्य करते हैं।

अशासकीय विद्यालय –ऐसी संस्थायें जिनकी डिग्री तो सरकार से मान्यता प्राप्त होती है, लेकिन ये संस्थायें अपनी प्रशासन व्यवस्था स्वयं करती है।

माध्यमिक स्तर–माध्यमिक स्तर पर कक्षा आठवीं के शिक्षार्थी आते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता का अध्ययन करना ।

अध्ययन की परिकल्पनायें –

$H0_1$ माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

$H0_2$ माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

$H0_3$ माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

शोध विधि –

शोधकार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या –

शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। वह सजातीय होते हैं। शोधार्थी ने अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में बिलासपुर जिले के कक्षा 8 में अध्ययनरत् समस्त विद्यार्थियों को लिया गया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श हेतु बिलासपुर जिले के कक्षा 8 में अध्ययनरत् 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

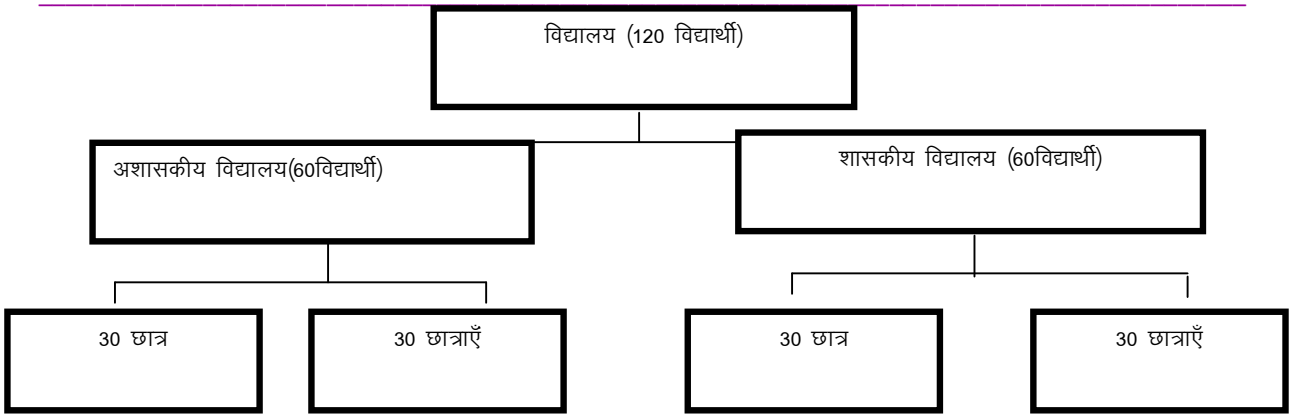

प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में डॉ. रोमा पाल द्वारा निर्मित A New Test of Creativity (VERBAL)प्रमाणीकृत उपकरण का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण विधियाँ :–

अध्ययन प्रयुक्त सांख्यिकी विश्लेषण प्रदत्तों के संकलन के पश्चात् आंकड़ो को व्यवस्थित किया गया हैं। तत्पश्चात् प्रदत्तों को उपरोक्त व्यवस्थापन निम्नाकिंत सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. प्रमाणिक त्रुटि
4. सार्थक अंतर हेतु टी–मूल्य परीक्षण
5. स्वतंत्र कोटि

आंकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या–

Ho1- माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी कमांक – 4.1

क्र.	सृजनात्मकता	N	M	SD	SED	t-test	df	सार्थकता स्तर	परिणाम
1	अशा.वि. के विद्यार्थी	**60**	**132.25**	**29.99**	**5.20**	**6.20**	**118**	**0.05=1.98**	**अस्वीकृत**
2	शा. वि. के विद्यार्थी	**60**	**100.06**	**26.90**				**0.01=2.62**	

व्याख्या एवं निष्कर्ष –

उपरोक्त तालिका के आधार पर माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनशीलता का मध्यमान 132.25 और प्रमाणिक विचलन 29.99 है तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनशीलता का मध्यमान 100.06 और प्रमाणिक विचलन 26.90 है। तथा इन दोनों का टी मूल्य 6.20 एवं प्रमाणिक त्रुटि 5.20 है।

जिसका df 118 के लिए सारणीगत मान 0.05 पर 1.98 और 0.01 पर 2.62 है।अतः यहाँ पर प्राप्त गणना द्वारा मान ज्यादा और सारणीगत मान कम है अतः इनके मध्य सार्थक अंतर पाया गया और हमारी परिकल्पना अस्वीकृत है।

माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः दोनों समूहों में सार्थक अंतर है और अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता अधिक है अपेक्षाकृत शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की।

स्तंभ ग्राफ 4.1

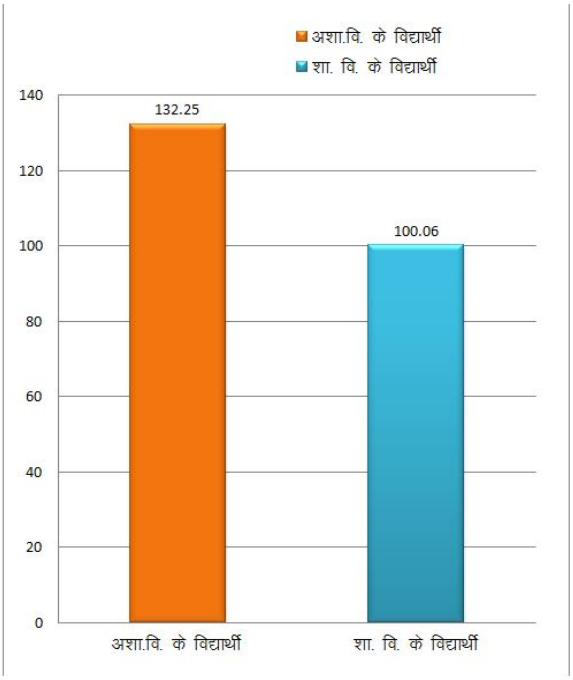

Ho2 -माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी कमांक – 4.2

क.	सृजनात्मकता	N	M	SD	SED	t-test	df	सार्थकता स्तर	परिणाम
1	अशा.वि.के छात्र	30	131.06	29.40	8.07	0.31	58	0.05=2.00	स्वीकृत
2	अशा. वि. के छात्राएँ	30	133.63	33.04				0.01=2.66	

व्याख्या एवं निष्कर्ष –

उपरोक्त तालिका के आधार पर माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के छात्रों के सृजनशीलता का मध्यमान 131.06 और प्रमाणिक विचलन 29.40 है तथा शासकीय विद्यालय के छात्राओं के सृजनशीलता का मध्यमान 133.63 और प्रमाणिक विचलन 33.04 है। तथा इन दोनों का t मूल्य 0.31 व प्रमाणिक त्रुटि 8.07 है। जिसका df 58 के लिए सारणीगत मान 0.05 पर 2.00 और 0.01 पर 2.66 है। अतः यहाँ पर प्राप्त गणना द्वारा

मान कम और सारणीगत मान अधिक है अतः इनके मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया और हमारी परिकल्पना स्वीकृत हुई।

माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनशीलता में सार्थक अंतर नही पाया गया।

अतः दोनों समूहों में सार्थक अंतर नही है और अशासकीय विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की सृजनशीलता में कोई अन्तर नही पाया गया।

स्तंभ ग्राफ 4.2

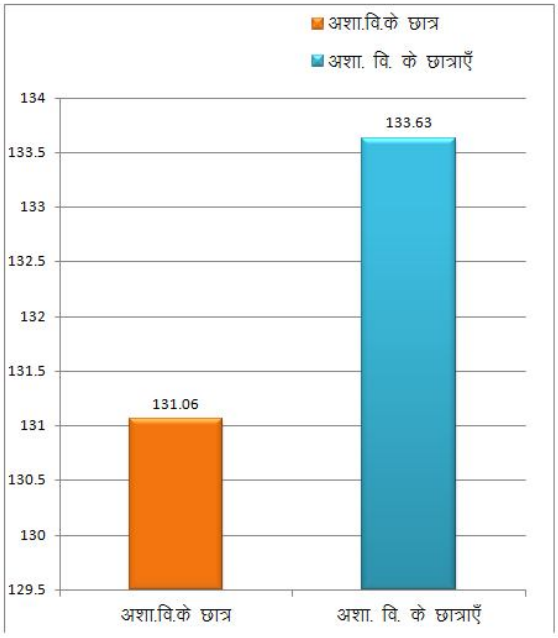

Ho3 -माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनश ीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी कमांक – 4.3

क.	सृजनात्मकता	N	M	SD	SED	t-test	df	सार्थकता स्तर	परिणाम
1	शा.वि.के छात्र	30	102	30.38	5.99	0.61	58	0.05=2.00	स्वीकृत
2	शा. वि. के छात्राएँ	30	98.33	12.52				0.01=2.66	

व्याख्या एवं निष्कर्ष –

उपरोक्त तालिका के आधार पर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के छात्रों के सृजनशीलता का मध्यमान 102और प्रमाणिक विचलन30.38है तथा शासकीय विद्यालय कीछात्राओं के सृजनशीलता 98.33 और प्रमाणिक विचलन 12.52 है। तथा इन दोनों का टी मूल्य 0.61 एवं प्रमाणिक त्रुटि 5.99है। जिसका df 58 के लिए सारणीगत मान 0.05 पर 2.00 और 0.01 पर 2.66 है।

अतः यहाँ पर प्राप्त गणना द्वारा प्राप्त मान कम और सारणीगत मान अधिक है अतः इनके मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया और हमारी परिकल्पना स्वीकृत हुई। माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनशीलता में सार्थक अंतर नही पाया गया।

अतः दोनों समूहों में सार्थक अंतर नही है और शासकीय विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की की सृजनशीलता में कोई अन्तर नही पाया गया ।

स्तंभ ग्राफ 4.3

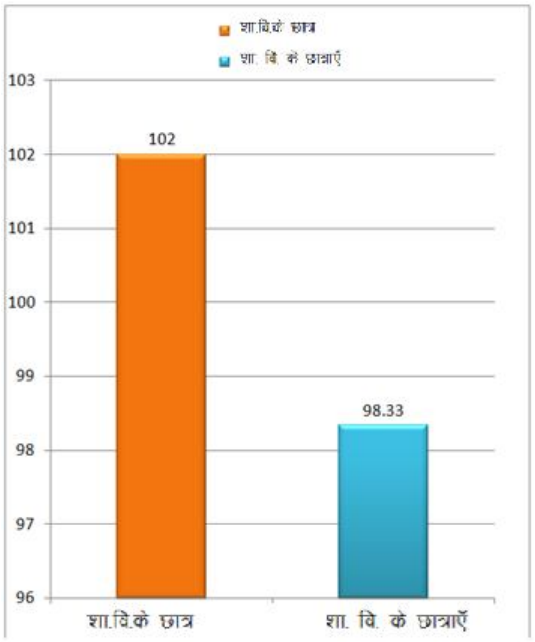

उपसंहार–

प्रस्तुत शोध के अध्ययन के परिणामस्वरुप यह पाया गया कि शासकीय तथा अशासकीय विद्याालयों के छात्रों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है अर्थात् अशासकीय विद्यालय के छात्रों में शासकीय विद्यालय के छात्रों की तुलना में सृजनात्मकता अधिक पायी गयी। प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता विद्यालय के वातावरण से बहुत अधिक प्रभावित होती है।अतः शोध के माध्यम से विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षकों को छात्रों के सृजनात्मकता के विकास हेतु उचित सुझाव प्रेषित किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के कुशल निर्देशन में सहायक है।शक्षकों को सचेत करने में सहायक है ताकि वे विद्यालय के वातावरण को छात्रों के सृजनात्मकता के विकास के अनुकूल कर सके।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. गुप्ता एस.पी. ''सांख्यिकीय विधियां'' शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 2003।
2. भटनागर डॉ.आर पी. ''शिक्षा अनुसंधान '' इर्गल बुक्स इन्टरनेशनल मेरठ , 2004।
3. कपिल एच.के. '' अनुसंधान विधियां'' हरि प्रसाद भार्गव बुक हाऊस आगरा , 2004।
4. डॉ. अस्थाना विपिन एवं अस्थाना श्वेता '' मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा –2 , 2005 पृष्ठ क्र. 403,4156।
5. डॉ.चौबे सरयु प्रसाद ''कन्सेप्ट पब्लिसिंग कंपनी'' A/15,16 कॉमर्शियल ब्लाक मोहन गार्डन नई दिल्ली , 2005।
6. डॉ. लाल रमन बिहारी एवं डॉ. जोशी सुरेशचन्द्र, ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकीय '' आर .लाल. बुक डिपो, मेरठ 2006।
7. डॉ. माथुर एस.एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान '' विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा –2 ,2007 पृ.क्र. 400– 405।

8. डॉ. भटनागर ए.बी.एवं डॉ. श्रीमति मीनाक्षी भटनागर '' मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' आर लाल बुक डिपो , मेरठ पृष्ठ क्र. 358,370,377।
9. Chaudhary ,C.G. : " An investigation into the trends of creative thinking ability of publish of Age group 11 to 13 in relation to some psycho-socio correlates". (Ph.D. SPU.) 1983.
10. Bindal, V.R.: "A study of creativity in relation of Experimental attitude and public perception of parents attitude towards creativity and locus of control". (Ph.D. Edu. DAVV.) 1984.
11. Gupta ,P.k.: " Development and evaluation of creativity training program for sixth grade children.'' (Ph.D.Edu. MCE.) 1985.
12. Bhogayata , C.K. : " A study of the relationship amongst creativity , self concept and locus of control .'' (Ph.D. Edu. Spu.) 1986.
13. Bara, S.S. : "A comparative study of the performance in Bachelor of Education Examination of High Creative and low creative Boys and Girls at Different levels of general intelligence and socio- economic status". (Ph.D. Edu. KUS.U.) 1986.
14. Brar, S.S. : " Development of creativity in relation to intelligence among the school children of 13 to 18 year age." (Ph.D. Psy. GNDU.) 1987.
15. Ganesan ,V.: " Knowledge workers organizational climate for creativity ." (Ph.D. Psy. Madras U.) 1987.